प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/23

पशुओं में ट्रिपेनोसोमियोसिस (सर्रा) रोग लक्षण एवं बचाव

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशुओं में ट्रिपेनोसोमियोसिस (सर्रा) रोग लक्षण एवं बचाव

- ट्रिपेनोसोमियोसिस(सर्रा), पालतू एवं जंगली पशुओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख रोगों में से एक है। इस रोग के कारण पशुओं की उत्पादक क्षमता में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अत्याधिक कमी हो जाती है ।
- अत्याधिक आर्थिक नुकसान को देखते हुए पशुपालकों को इस रोग के रोकथाम के बारे में समुचित जानकारी रखना महत्वपूर्ण हो जाताहै ।

रोगकाकारणः

- यह रक्त परजीवी जनित रोग, ट्रिपेनोसोमाइवेन्साई नामक प्रोटोजोआ के पशु के रक्त–प्लाज्मा में उपस्थिति के कारण होता है। इसे **'सर्रा'** रोग के नाम से भी जाना जाता है।
- यह परजीवी बहुत सारे पशुओं जैसे–घोड़ा, कुत्ता, ऊँट, भैंस, गाय, हाथी, सुअर, बिल्लीचूहा, खरगोश, बाघ, हाथी, हिरन, सियार, चितल, लोमड़ी आदि को प्रभावित करता है । लेकिन ऊँट, घोड़ा एवं कुत्ता में सर्रा बहुत गंभीर रोग के रूप में प्रकट होता है। भैंस में इस रोग का प्रकोप गाय की अपेक्षा अधिक होता हैं ।
- यह रोग बरसात के समय तथा बरसात के 2–3 महीनों में अधिक देखने को मिलता है क्योंकि इस मौसम में रोग फेलाने वाले उत्तरदायी मक्खियो जैसे–टेबेनस (मुख्य रूप से) आदि की संख्या अत्याधिक बढ़ जातीहै ।

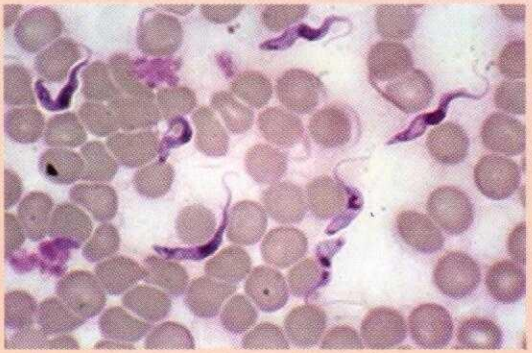

रोग का प्रसारः

इस रोग का फेलाव रोग–ग्रस्त पशु से स्वस्थ पशुमें खून चूसने या काटने वाले मक्खी जैसे–टेबेनस (मुख्यतः), स्टोमोक्सिस, लाइपरोसिया आदि द्वारा यांत्रिक रूप से संचरण होता है । बिहार में टेबेनस मक्खी को पशुपालक 'डांस' मक्खी के नाम से ज्यादा जानते है।

रोगकालक्षण–

- इस रोग का गाय–भैंस में निम्नलिखित मुख्य लक्षण दिखाई पड़ता हैं–प्रभावित पशु में रूक–रूक कर बुखार आना, बार–बार पेशाब करना, खून की कमी, पशु द्वारा गोल चक्कर लगाना, सिर को दीवार या किसी कड़ी वस्तु में टकराना ।
- खाना–पीना कम कर देना, आँख एवं नाक से पानी चलने लगना, मुँह से भी लार गिरने
- प्रभावित पशुका धीरे–धीरे अत्याधिक दुर्बल एवं कमजोर होते चला जाना।
- सकमित दुधारू पशु का दुध उत्पादन बहुत ज्यादा कम हो जाना।
- प्रभावित पशु का प्रजनन–क्षमता में कमी एवं गभित पशुओं में गर्भपात होने की पूरी संभावना
- घोडा में–रूक–रूक कर बुखार आना, दुर्बलता, पैर एवं शरीर के निचले हिस्सों में जलीय त्वचा शोथ (इडीमा), पित्ती के जैसा फलक (अर्टिकेरियल प्लैक) गर्दन एवं शरीर के पार्श्व क्षेत्रों आदि लक्षण प्रकट होता है ।
- कुत्ता में–सर्रा रोग से संकमित कुत्ता के कंठनली में जलीय त्वचा शोथ (इडीमा) हो जाता है जिसके कारण संकमित कुत्ता का आवाज रैबीज रोग के समान हो जाता है। इसके अलावे कॉर्नियल ओपेसिटी भी होता है जिसमें आँख ब्लू रंग का हेा जाता है।

रोग की पहचानः–

- लक्षणों के आधार पर ।
- रोग–ग्रस्त पशु के खून की जाँचकर ट्रिपेनोसोमाइवेन्साई प्रोटोजोआ को पता लगाया जा सकता है।

रोगकारोकथाम :-

सर्रारोगसे बचाव हेतू कोई टीका अभी उपलब्ध नही हैं । अतः इस रोग से बचाव हेतू क्वानापाइरामीनक्लोराइड औषधि या आइसोमेटामिडियमक्लोराइड का प्रयोग कर किया जा सकता है जिसके प्रयोग से पशु को 4 महीनो तक सर्रा रोग नहीं हो पाता है।

- सर्रा रोग फेलाने वाले मक्खियों जैसे–टेबेनस आदि की संख्या को नियंत्रण करके भी इस रोग के संक्रमण को कम किया जा सकता है । मक्खियों की संख्या को नियंत्रण कीटनाशक का छिड़काव समयानुसार पशु आवास के अन्दर एवं आस–पास करके रहना चाहिए ।
- ट्रिपेनोसोमियोसिस (सर्रा) रोग के उपचार हेतु क्वानापाइरामीनसल्फेट तथा क्वानापाइरामीनक्लोराइड औषधि पशु चिकित्सक की देख–रेख में देना चाहिए।
- इस रोग के प्रभावित पशु के शरीर में अत्याधिक मात्रा में ग्लुकोज की कमी हो जाती है जिसकी पूर्ति हेतु डेक्सट्रोज सैलाइन का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार करना फायदेमंद होता है।

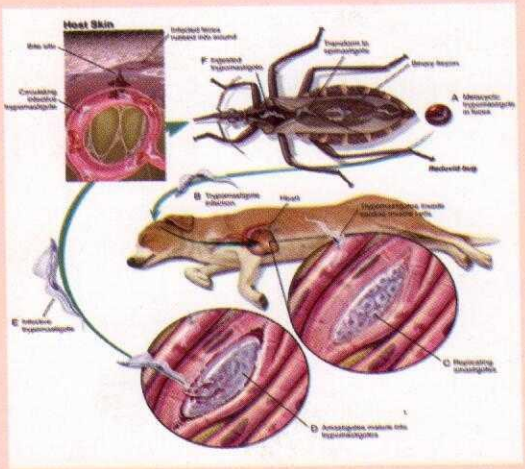

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- अजीत कुमार एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN